



शरीर पांच तत्वों से निर्मित है। तो इसे हील करने के लिए दवाईयों की नहीं मूल्यों की जरूरत है। ऋषि-मुनि, तपस्वियों के पास ऐसा कोई वैद्य नहीं होता था, ऐसी कोई मेडिसिन नहीं होती थी जिससे वो अपने आपको ठीक कर सकें। लेकिन उनके अन्दर वो गुण और शक्तियां थीं जिनके द्वारा शरीर अपने आप हील हो जाता था।

हम सभी को जानकर ये बिल्कुल हैरानी नहीं होगी कि हमारे शरीर का जो सिस्टम बना है, शरीर का जो तंत्र बना है उसके तंत्र को बहुत ही सिस्टेमेटिक बनाया गया है। जिसके अन्दर वो सबकुछ मौजूद है जो शरीर को हील कर देता है। आपने जानवरों का मिसाल तो देखा ही होगा अगर उनको कहीं चोट लग जाये या कोई ऐसी चीजें हो जायें बाहर तो अपने आप चलकर, अपने आपको चाट कर ठीक कर लेते हैं। ऐसे ही हमारा शरीर पंच तत्वों से निर्मित है, इसमें पृथ्वी है, जल है, अग्नि है, वायु है, आकाश है, ये पांचों तत्व जुड़े हुए हैं। और कहा जाता है कि हर एक तत्व से शरीर का हर एक अंग बना हुआ है।

1. पृथ्वी तत्व : सबसे पहले हम अलग-अलग इसको देखेंगे कि पृथ्वी तत्व से हमारा हड्डी, मांसपेशी, नाखून, बाल ये सारी चीजें बनी हुई हैं।

2. जल तत्व : जल तत्व से हमारा जितना भी यूरिनरी सिस्टम है, जिसको हम कहते हैं उत्सर्जन तंत्र। यूरिनरी सिस्टम के जैसे किडनी है, किडनी फंक्शन है पूरा, जो पानी से कनेक्टेड है, बना है।

3. अग्नि तत्व : अग्नि तत्व से हमारा पूरा डायजेस्टिव सिस्टम बना है।

4. वायु तत्व : वायु तत्व से हमारा पूरा श्वसन तंत्र बना है।

5. आकाश तत्व : आकाश तत्व से हमारा इएनटी सिस्टम बना है। इअर, नॉज और थ्रॉट का सिस्टम बना है। तो ये पांच

तत्वों से हमारे शरीर के सारे तंत्र जो हैं वो बने हुए हैं। अब आप ये चीज देखें कि ये जो पांचों तत्व हैं, ये अपने आप में हील कर देते हैं शरीर को। क्योंकि शरीर पांच तत्वों से निर्मित है। तो इसे हील करने के लिए दवाईयों की नहीं मूल्यों की जरूरत है। ऋषि-मुनि, तपस्वियों के पास ऐसा कोई वैद्य नहीं

यूरिनरी सिस्टम कहते हैं या हमारा जो किडनी फंक्शन वाला जो एरिया है वो खराब हो गया अटैचमेंट के कारण, मोह के कारण। क्योंकि जब हम बहुत ज्यादा मोह ग्रस्त हुए, मेरा-मेरा किया तो उससे हमारे इस सिस्टम में सबसे ज्यादा समस्या आई। जल का काम क्या है? सबके लिए है ना जल, एक के लिए तो नहीं है!

सिद्ध होती है कि किडनी खराब होने का कारण अटैचमेंट ज्यादा है। ये किसी भी चीज से हो सकता है। इसको ठीक करने के लिए हमको पवित्रता की जरूरत है, पवित्रता की शक्ति की जरूरत है।

अग्नि तत्व का मूल्य

तीसरा अग्नि तत्व ऐसे ही हमारा जो

जरूरत है।

वायु तत्व को हील करने के मूल्य

हमारा जो वायु तत्व है, जिससे बना है हमारा श्वसन तंत्र। ये खराब हो गया ग्रीड के कारण, ज्यादा लोभ वृत्ति में हम आये, देखो लोभ के कारण पेड़ की कटाई सबकुछ हो रही है। माना हमको कुछ न

शरीर खुद ही खुद का हीलर है

होता था, ऐसी कोई मेडिसिन नहीं होती थी जिससे वो अपने आपको ठीक कर सकें। लेकिन उनके अन्दर वो गुण और शक्तियां थीं जिनके द्वारा शरीर अपने आप हील हो जाता था।

लेकिन जब वो सिमित हो गया तो उससे हमारा इस सिस्टम पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ने लगा। इसलिए किडनी फंक्शन और ये वाली चीजें खराब हो गईं, अटैचमेंट या मोह के कारण। इसीलिए आपने देखा

डायजेस्टिव सिस्टम है वो खराब हो गया हमारे अन्दर क्रोध के कारण। जितना क्रोध किया उतना हमारा डायजेस्टिव सिस्टम हील होना बंद हो गया। तो इससे हमारे अन्दर इन्सुलिन बनना बंद हो गया। जैसे

कुछ मिलना चाहिए बाकी प्रकृति को कुछ भी होता रहे। उससे ब्लॉकिज शुरू हुई हार्ट के अन्दर की। तो वो ठीक करने के लिए हमको सबसे ज्यादा जरूरत है प्यार की, लव की। तो लव अगर आये तो हमारा हार्ट का सिस्टम कम्पलीट ठीक हो जायेगा।

आत्मा के मूल्य शरीर की हीलिंग पावर

आपको जानकर हैरानी होगी कि हमारा शरीर ही मूल्यों को मानता है। जैसे एक उदाहरण है, कहा जाता है कि शरीर में जो-जो रोग होते हैं उन रोगों का कारण हमारे विचार होते हैं। और उसको डॉक्टरों आज बोल ही रहे हैं साइकोसोमेटिक डिजीज बहुत ज्यादा होती हैं। तो जो विचार हैं वो विचार हमारे एक-एक तंत्र को प्रभावित करते हैं।

हमारे पृथ्वी तत्व से जुड़े हुए मूल्य

हमारी पृथ्वी तत्व से जुड़ी हुई मूल्य चीज है, जिसको हम मूलाधार चक्र भी कहते हैं। जो मूलाधार चक्र को शक्ति की जरूरत है, लेकिन वो शक्ति काम क्यों नहीं कर रही है क्योंकि मूलाधार चक्र के साथ हमने सबसे ज्यादा काम विकार को जोड़ दिया। और दुनिया में जितनी भी शास्त्रगत बातें लिखी जाती हैं उसमें लिखा जाता है कि मूलाधार चक्र हमारे पूरे देह का मूल है। चक्रों का मूल है। इसका मतलब है कि उस चक्र से वो चक्र अगर ज्यादा हील है तो हमारा पूरा शरीर स्वस्थ है। तो मूलाधार चक्र या पृथ्वी तत्व खराब ज्यादा हो गया क्योंकि हम सबसे ज्यादा काम विकार को अहमियत देने लगे। कामनाओं को अहमियत देने लगे। जिससे हमारे हड्डी, मांसपेशी, नाखून, बाल सब कमजोर हो गये। तो जितने भी कामना से ज्यादा लिप्त चीजें होंगी उससे हमारा शरीर का ये वाला सिस्टम पूरी तरह से नष्ट होगा।

लेकिन इसको ठीक करने के लिए हमको शक्ति की आवश्यकता है। इसीलिए हनुमान जी, और दुर्गा जी को बैचलर दिखाते हैं, लाल रंग से रंगा हुआ दिखाते हैं। क्योंकि लाल रंग शक्ति का प्रतीक है।

जल तत्व का मूल्य

इसी तरह जो दूसरा तंत्र है जिसको हम



होगा कि जितने भी ऋषि-मुनि या तपस्वी हैं उनको दिखाया जाता है कि उन्होंने गेरुआ वस्त्र पहना हुआ है। गेरुआ वस्त्र पहनकर चल रहे हैं तो मोह को जीता हुआ है। मोहजीत हैं। यहाँ से निकलकर बाहर चले गए। इसीलिए जब तक हम मोह को जीतेंगे नहीं, अटैचमेंट को नहीं जीतेंगे, जब मोह होता है हम क्रिटिसाइज भी करते हैं, सबकी निंदा भी करते हैं तो उससे हमारा किडनी फंक्शन डैमेज होना स्टार्ट होता है। तो इससे एक बात और

डायबिटिक पेशेन्ट हो गये। जितने भी डायबिटिक पेशेन्ट हैं उन सबका एक ही कारण है इरिटेशन, नाराजगी, गुस्सा, उससे हमारा डायजेस्टिव सिस्टम खराब हो गया। पर डायजेस्टिव सिस्टम को ठीक करने के लिए खुशी चाहिए, सुख चाहिए। इसीलिए सुख को पीले कलर के साथ दिखाया जाता है। पीला फल खाते हैं लोग पेट को ठीक करने के लिए। तो डायजेस्टिव सिस्टम को ठीक करने के लिए हमको सबसे ज्यादा खुशी की

किन मूल्यों से आकाश तत्व हील होगा

अब है हमारा इएनटी सिस्टम। जो स्पेस के साथ जुड़ा होता है। स्पेस का मतलब होता है इअर, नॉज और थ्रॉट के अन्दर प्रॉब्लम क्यों आई, क्योंकि हम किसी को स्पेस नहीं देते, किसी को जगह नहीं देते, न बोलने का, न खाने का, न पीने का, न रहने का इससे फुल टाइम सर्दी जुकाम उनको लगा रहेगा और ये सारी चीजें खराब हो गईं इंगो के कारण। अहम के कारण। इसलिए आप देखो खुले आसमान में शांति महसूस होती है ना तो हमको इसके लिए शांति की जरूरत है। जितनी गहरी शांति उतना हमारा ये इंटरसिस्टम हील हो जायेगा। तो इसका मतलब वैल्यूज की जरूरत है।

इसके बाद दो और हैं- मन और बुद्धि। मन और बुद्धि का मतलब अगर हमारा मन डर गया तो उसको ठीक करने के लिए ज्ञान चाहिए, शक्ति चाहिए। ज्ञान की शक्ति, नॉलेज की पावर। अब बुद्धि के लिए हमको क्रियेटिविटी चाहिए। रचनात्मकता चाहिए। बुद्धि आलसी हो गई और मन डर गया तो ये दो चीजें भी इसके साथ काम करती हैं, तो ये सातों गुण अगर हम आत्मा में विकसित कर लें, अपने अन्दर विकसित कर लें तो ये सारे रोग और पूरा शरीर बिल्कुल स्वस्थ हो जायेगा। सात रंगों को एक अनुपात में जोड़ दो तो वह सफेद रंग में बदल जाएगा। ये सफेद रंग पूरी बाँडी को एक एंजेलिक स्टेज में ले जाता है। तो जब तक ये सातों गुण हमारे अन्दर नहीं आये तब तक बाँडी की सातों चीजें मन, बुद्धि और पांचों तत्व ठीक नहीं होंगे। इसलिए थोड़ा-सा जागृत होकर इन गुणों को विकसित करें न कि दवाईयों परफोकस करें।



सिवनी-लखनादौन-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में योगा टीचर कृष्ण कुमार श्रीवास, टीचर मोहन शर्मा, रिटा. एचएम गंगाराम गोल्हानी, योगा प्रशिक्षक सुरेश साहू, दिलीप अग्रवाल, ब्र.कु. समता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, योग समिति अध्यक्ष तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



बिजावर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर बिजावर सब जेल में आयोजित नशा मुक्ति कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. अवधेश भाई, ब्र.कु. रचना बहन व ब्र.कु. साधना बहन ने सभी को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करते हुए इससे दूर रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम में सभी जेल स्टाफ उपस्थित रहे।



गाडरवारा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर नगर के मेन चौराहे झंडा चौक पर आयोजित नशा मुक्ति चित्र प्रदर्शनी के शुभारंभ में कौरव समाज से अध्यक्ष पवन राव साहब एवं मुसलमान भाई बोहरा जी, ब्र.कु. अंजना बहन, ब्र.कु. अनुपमा बहन, ब्र.कु. फुलवर भाई, दिनेश भाई, देवेन्द्र भाई, गोविंद भाई, शिवदयाल वर्मा, शिव प्रसाद भाई, रमेश भाई, राजेश भाई सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।